पूर्वोत्तर में समन्वय एवं सहधर्मिता की भाषा बनती हिंदी

हिंदी विभाग राजीव गांधी विश्वविद्यालय में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी संपन्न

▲ राजीव रंजन प्रसाद

उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के प्रो. सदानंद प्रसाद गुप्त की अध्यक्षता में 'पूर्वोत्तर भारत की जनभाषाएं: अंतःक्रिया एवं अंतर्संबंध' विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. साकेत कुशवाहा की अगुवाई में हुआ। इस मौके पर कॉटन कॉलेज, गुवाहाटी के पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष और प्राध्यापक पद से सेवानिवृत्त प्रो. अमूल्य बर्मन ने बीज-वक्तव्य दिया। उन्होंने हिंदी के साथ पूर्वोत्तर की जनभाषाओं के समन्वय की परंपरा को बेजोड़ बताया। उन्होंने बल देते हुए कहा कि 'हिंदी, यदि पूर्वोत्तर की संस्कृति को आघात पहुंचाती या किसी तरह का व्यवधान डालती तो यह भाषा आज उत्तर-पूर्व में इतनी लोकप्रिय और मान्य होकर अपनी स्वतंत्र पहचान स्थापित नहीं कर पाती।'

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. साकेत कुशवाहा ने कहा कि पूर्वोत्तर भारत में हिंदी की जन-स्वीकृति खुद द्वारा आत्मसात की हुई है, ऐसे में यह सोचना गलत नहीं है कि हिंदी यहां की स्थानीय एवं क्षेत्रीय जनभाषाओं की विशिष्टताओं, विभेदों, असमानताओं आदि के साथ समन्वय स्थापित करते हुए राष्ट्रीय भूमिका का निर्वहन करेगी। अकादमिक शोध की दृष्टि से इस दिशा में तुलनात्मक अध्ययन का दायित्व अधिक है।' उद्घाटन सत्र की सम्मानित अतिथि प्रो. निर्मला एस. मौर्य ने कहा कि हिंदीतर प्रदेशों में हिंदी की स्थिति लगातार अच्छी बन रही है। स्वतंत्रता पूर्व पूरे देश की जनभाषाओं को संपर्क-संवाद के स्तर पर हिंदी से जोड़ने का काम गांधीजी ने किया। आज आवश्यकता है कि जनभाषाओं को हिंदी के साथ तुलनात्मक अध्ययन-अध्यापन के विषय तथा शोध-क्षेत्र के रूप में चुना जाए। पूर्वोत्तर की जनभाषाओं के साथ अंतःक्रिया एवं अंतर्संबंध स्थापित किए जाने में इस तरह के तुलनात्मक अध्ययन का महत्त्व ज्यादा है। अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए प्रो. सदानंद प्रसाद गुप्त ने जनभाषाओं के प्रचार-प्रसार और विकास में अपने संस्थान की भूमिका और उल्लेखनीय कार्यों का जिक्र करते हुए कहा कि यह आयोजन हमारे इसी दायित्व की मजबूत कड़ी है। इस संगोष्ठी के पहले दिन कार्यक्रम के आरंभ में वयोवृद्ध लेखिका कृष्णा सोबती, लेखिका अर्चना वर्मा एवं प्रख्यात आलोचक प्रो. नामवर सिंह को श्रद्धांजलि अर्पित की गई एवं दो मिनट का मौन रखा गया। तत्पश्चात प्रो. ओकेन लेगो ने गणमान्य अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि पूर्वोत्तर की जनभाषाओं तक हिंदी की पहुंच बेरोकटोक है। वह इस प्रदेश में समानांतर रूप से संपर्क-भाषा के रूप में प्रचलन में है। राजीव गांधी विश्वविद्यालय के भाषा संकायाध्यक्ष प्रो. हरीश कुमार शर्मा ने विषय-प्रस्तावना प्रस्तुत करते हुए कहा कि किसी भी क्षेत्र की परंपरा-संस्कृति को जानने के लिए प्रत्यक्ष संवाद-संपर्क आवश्यक है। पूर्वोत्तर में हिंदी की जीवंत उपस्थिति के बारे में अपना अनुभव साझा करते हुए एनडीआरएफ कमांडेंट उमेश कुमार थपलियाल ने बतौर विशिष्ट अतिथि कहा कि 'अरुणाचली भाषाओं की बहुलता के बावजूद हिंदी यहां संकटमोचन भाषा की तरह कार्य करती है। यह हमें भारी मदद पहुंचाती है। हमारी टीम जब भी औचक या आकस्मिक परिस्थिति में मदद के लिए आगे कदम बढ़ाती है, तो संवाद साधने में भाषा का प्रश्न सामने होता है। लेकिन अरुणाचल के लोग आसानी से हिंदी में बातचीत कर लेते हैं जिससे हमें सुविधा होती है और हम उन तक समय से राहत-कार्य पहुंचा पाने में सफल होते हैं।' उद्घाटन एवं समापन सत्र को छोड़कर चार तकनीकी सत्र हुए जिसकी अध्यक्षता क्रमशः प्रो. आरिफ नजीर, प्रो. गंगा प्रसाद शर्मा, प्रो. अमरनाथ शर्मा, प्रो. निर्मला एस. मौर्य ने की। विभिन्न सत्रों में शामिल वक्ताओं ने अपनी बातें पूर्वोत्तर की जनभाषाओं के परिप्रेक्ष्य में हिंदी के साथ अंतःक्रिया एवं अंतर्संबंध स्थापित किए जाने के संदर्भ में विस्तारपूर्वक की। समापन-सत्र के मुख्य अतिथि और रुहेलखंड विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अनिल शुक्ल ने अपने उद्बोधन द्वारा जनभाषाओं को जन-साधारण की बड़ी ताकत और प्रेरणा माना, जिन्हें संजोकर और बचाकर रखे जाने की जरूरत है।

21-22 फरवरी को राजीव गांधी विश्वविद्यालय में संपन्न इस संगोष्ठी में रुहेलखंड विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अनिल शुक्ल, तमिलनाडु हिंदी अकादमी की अध्यक्ष प्रो. निर्मला एस. मौर्य, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष के प्रो. आरिफ नजीर सहित प्रो. गंगा प्रसाद शर्मा, प्रो. अमरनाथ शर्मा, प्रो. हितेंद्र मिश्र, डॉ. श्याम शंकर सिंह, डॉ. अरुण कुमार पांडेय, डॉ. सुनील तिवारी, डॉ. मधुसूदन शर्मा, डॉ. जय कौशल, डॉ. चंद्रशेखर, डॉ. राहुल अवस्थी, वाइखोम चींखैङनबा, दिगंत बोरा इत्यादि उपस्थित थे। संगोष्ठी के पहले दिन काव्य-संध्या कार्यक्रम का आयोजन हुआ, जिसमें बरेली से शिरकत कर रहे डॉ. राहुल अवस्थी ने अपनी कुशल वाग्मिता और सफल मंच-संचालन की कला से सभी का मन मोह लिया। इस मौके पर प्रो. निर्मला एस. मौर्य, प्रो. सदानंद प्रसाद गुप्त, प्रो. गंगा प्रसाद शर्मा, डॉ. मधुसूदन शर्मा, डॉ. सुनील तिवारी सहित विभाग के कई प्राध्यापकों एवं विद्यार्थियों ने अपनी स्वरचित कविता पढ़ी। यह संपूर्ण आयोजन राजीव गांधी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग तथा उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित था। कार्यक्रम सह-संयोजक डॉ. विश्वजीत कुमार मिश्र तथा संगोष्ठी-प्रबंधन में दक्ष डॉ. सत्यप्रकाश पाल की भूमिका अतुलनीय रही। कार्यक्रम के विभिन्न जिम्मेदारियों को निभाने में हिंदी विभाग के विद्यार्थियों की उपस्थिति बढ़-चढ़कर रही, तो प्रयोजनमूलक हिंदी डिप्लोमा के विद्यार्थी मानसी नालोइजू, तिङकाई, गोपा, गोतीन और पासाङ ने प्रतिवेदन तैयार करने के अपने दायित्व का बखूबी निर्वहन किया।

In the year 2019, the Department of Hindi, Rajiv Gandhi University organized two days National Seminar on 21st & 22nd February in AITS Conference Hall of Rajiv Gandhi University. Honorable Vice -Chancellor of the University Prof Saket Kushwaha who was Chief Guest of the occasion said that the contribution of three things is the highest in the development of the thinking of human beings they are Fire, Wheel and Language. Naturally, at the level of language, the status of the voiceless people automatically reveals the importance of language. For this reason, sensitive and conscious efforts towards mother tongue, public language are necessary. Public acceptance of Hindi has been assimilated in Northeast India. In such a situation, it is not wrong to think that Hindi will discharge its national role by coordinating with the specialties of local and regional public languages, inequalities etc. In the context of academic research, the responsibility of comparative study is more in this direction. In this seminar Prof. Anil Shukla, Vice-Chancellor, University of Ruhelkhand, Prof. Nirmala S. Maurya, President of Tamilnadu Hindi Academy, Prof. Arif Nazeer, Former Head, Department of Hindi, Aligarh Muslim University and Prof. Ganga Prasad Sharma, Prof. Amarnath Sharma, Prof. Hitendra Mishra, Dr. Shyam Shankar Singh, Dr. Arun Kumar Pandey, Dr. Sunil Tiwari, Dr. Madhusudan Sharma, Dr. Jai Kaushal, Dr. Chandrasekhar, Dr. Rahul Awasthi, Waikhom Chinkadaanbaa, Diganta Bora were also present. The role of Hindi in establishing interaction and interrelation with the public languages of the North East was received by the esteemed guests and distinguished speakers. On the first day of the seminar, a Poetry Reading program

was organized in which Dr. Rahul Awasthi, who is attending from Bareilly, charmed everyone with his skillful eloquence and successful stage presence. On this occasion, Prof. Nirmala S. Maurya, Prof. Sadanand Prasad Gupta, Prof. Ganga Prasad Sharma, Dr. Madhusudan Sharma, Dr. Sunil Tiwari and many professors and students of the department read their poems. The entire event was organized under the joint aegis which includes the Dept. of Hindi, Rajiv Gandhi University and Uttar Pradesh Hindi Institute, Lucknow.